हिंदी युवकभारती

बारहवीं कक्षा

Edition: June 2014

डॉ. सुशीला पाल
(*M.A. B.Ed. Ph.D*)
M. S. University, Baroda

लक्ष्मीदेवी साहू
(*M.A. B.Ed.*)
Mumbai University

Published by

Target PUBLICATIONS PVT. LTD.
Shiv Mandir Sabhagriha,
Mhatre Nagar, Near LIC Colony,
Mithagar Road, Mulund (E),
Mumbai - 400 081
Off.Tel: 022 – 6551 6551
Email: mail@targetpublications.org
Website: www.targetpublications.org

Price : ₹ 180/-

Printed at:
Repro India Ltd.
Mumbai - 400 013

©Target Publications PVT. LTD.
All rights reserved

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, C.D. ROM/Audio Video Cassettes or electronic, mechanical including photocopying; recording or by any information storage and retrieval system without permission in writing from the Publisher.

महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ, पुणे (2013 – 2014)
के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक पर आधारित

हिंदी युवकभारती

बारहवीं कक्षा

वैशिष्ट गुणवत्ता :

- कक्षा १२ वीं के नवीनतम प्रश्नपत्र के प्रारूप पर आधारित।
- पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त सभी अनिवार्य प्रश्नों का समावेश।
- प्रत्येक गद्यखण्ड एवं पद्यखण्ड के लिए सटीक सारांश।
- अभ्यास के लिए अपेक्षित प्रश्न और उचित उत्तर
- व्याकरण संबंधी प्रश्नों के उदाहरण के साथ सटीक सरल उत्तर।
- पाठ्यपुस्तक में निहित सभी प्रश्न * से रेखांकित
- प्रत्येक पाठ के अंत में 'ज्ञान जाँचिए' प्रश्नपत्र
- आदर्श प्रश्नपत्र
- 2014 के बोर्ड प्रश्नपत्र का समावेश

TEID : 722

प्रस्तावना

प्रिय छात्रगण!

बारहवीं कक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित प्रस्तुत पुस्तक आपके समक्ष पहुँचाते हुए हमे अत्यंत संतोष की अनुभूति हो रही है।

विद्यार्थी जीवन उत्सुकता एवं जिज्ञासा से भरा हुआ होता है। मेरे प्यारे छात्रगण आपके अथाह परिश्रम को सार्थक बनाने के लिए, आपकी मंशा के अनुरूप प्रस्तुत मार्गदर्शन पुस्तिका आपको सोंपना चाहते हैं। जिसको पढ़कर आप अच्छे अंक प्राप्त कर सकेंगे।

पाठ्य पुस्तक और परीक्षा-प्रणाली के अनुरुप मार्गदर्शन पुस्तिका का प्रस्तुत संस्करण नवीन प्रारूप, पाठ्य पुस्तिका के स्वाध्याय के अनुरूप

* 120, 100, 80 एवं 60 शब्दों में प्रश्नों के उत्तर, गद्यखण्ड एवं पद्यखण्ड पर आधारित प्रश्नों के उत्तर, शब्दार्थ, मुहावरे, कहावतें, पूरक पठन एवं द्रुतवाचन का समावेश किया गया है।
* प्रत्येक पाठ के अंत में 'ज्ञान जाँचिए' प्रश्नपत्र का समावेश किया गया है।
* लेखन विभाग के अंतर्गत निबंध लेखन, पत्रलेखन, विज्ञापन, सारांश लेखन एवं गद्य आकलन को भी भरपूर सामग्री के साथ बहुत ही सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया गया है।
* व्याकरण के अंतर्गत वाक्यभेद, संज्ञा, विशेषण, क्रिया के काल, मुहावरे एवं वाक्य शुद्धिकरण इत्यादि को भरपूर उदाहरणों के सहित व्याख्यायित किया गया है।

हमे खुशी है कि नवीन पाठ्य पुस्तक पर आधारित प्रस्तुत मार्गदर्शन पुस्तिका छात्रों को परीक्षा उपयोगी साबित होगी।

इन सभी परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए, हमने पूर्ण पुस्तक की रचना करने की सार्थक कोशिश की है।
आशा है, यह पुस्तक रोचक, स्तरीय और प्रमाणिक बनें, इसके लिए आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद!

प्रकाशक

प्रश्नपत्र का प्रारूप

गद्य विभाग

प्र.1	**अ)**	निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।	**04**
	आ)	निम्नलिखित में से कोई **एक** गद्यांश पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2 में से 1)	**04**
प्र.2	**अ)**	निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर। (4 में से 2)	**08**
	आ)	निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखिए। (3 में से 1)	**06**

पद्य विभाग

प्र.3	**अ)**	निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर काव्य फिर से लिखिए।	**04**
	आ)	निम्नलिखित में से कोई **एक** पद्यांश पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2 में से 1)	**04**
प्र.4.	**अ)**	निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए। (4 में से 2)	**06**
	आ)	निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए। (3 में से 1)	**04**
प्र.5	**अ)**	निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए। (3 में से 1)	**04**
	आ)	निम्नलिखित विषयों में से **दो** टिप्पणियाँ लिखिए। प्रत्येक टिप्पणी लगभग 60 शब्दों मे हो। (4 में से 2)	**06**
		अथवा	
		निम्नलिखित किसी एक पाठ का सारांश लगभग सौ शब्दों में लिखिए। (2 में से 1)	
प्र.6	**अ)**	निम्नलिखित वाक्यों के भेद पहचानकर लिखिए। (3 में से 2)	**02**
	आ)	कोष्ठक की सूचना के अनुसार काल-परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए। (3 में से 2)	**02**
	इ)	भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए। (2 में से 1)	**01**
		विशेषणरूप बनाइए। (2 में से 1)	**01**
	ई)	निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए। (4 में से 2)	**02**
	उ)	निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके फिर से लिखिए। (3 में से 2)	**02**
प्र.7		निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखिए। (5 में से 1)	**10**
प्र.8	**अ)**	निम्नलिखित गद्य खंड ध्यान से पढिए और उस पर आकलन हेतु **पाँच** ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए। जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हो।	**05**
		अथवा	
		उपर्युक्त गद्य खंड का एक तिहाई (1/3) अपने शब्दों में सार लिखिए।	
	ब)	निम्नलिखित किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए। (2 में से 1)	**05**
		अथवा	
		दिए गए विषय पर विज्ञापन तैयार कीजिए।	

विषय - सूची

क्र.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठांक
	गद्य - विभाग		
1	युवाओं से	स्वामी विवेकानंद	1
2	सयानी बुआ	मन्नू भंडारी	9
3	शनि-सबसे सुंदर ग्रह	गुणाकर मुळे	20
4	युवा क्रांति के शोले	मधुकांत	30
5	योग्यता और व्यवसाय का चुनाव	माधवराव सप्रे	41
6	सोना	महादेवी वर्मा	51
7	रसायन और हमारा पर्यावरण	एन. एल. रामनाथन्	61
8	एक मुट्ठी छाँव	मनीषा कुलश्रेष्ठ	70
9	एक कुत्ता और एक मैना	हजारीप्रसाद द्विवेदी	80
10	मृत्युबोध के कुछ और क्षण	रवींद्रनाथ त्यागी	91
11	बारिश की रात	मिथिलेश्वर	101
	पद्य - विभाग		
1	कबीर के दोहे	कबीर	112
2	नीतिवचन	रहीम	119
3	रैदासबानी	रैदास	126
4	तुकड़ोजी के पद	राष्ट्रसंत तुकड़ोजी	132
5	वह तोड़ती पत्थर	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	139
6	एक वृक्ष की हत्या	कुँवर नारायण	146
7	माँ, बस यह वरदान चाहिए	बालकवि बैरागी	154
8	बुनाई का गीत	केदारनाथ सिंह	159
9	वृद्धाएँ धरती का नमक हैं	अनामिका	165
10	बहुत याद आता है	ज्योति व्यास	172

क्र.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठांक
	द्रुत - वाचन (विविधा)		
1	अहिंसा की शक्ति	महात्मा गांधी	178
2	ज्ञानसाधना	प्रभाकर माचवे	184
3	महान विभूतियाँ	रेणू सरन् (संकलक)	191
4	यात्रा जपान की	ममता कालिया	199
5	खोई हुई वस्तु की खोज	लक्ष्मीकांत झा	206
6	हंसिनी की भविष्यवाणी	मनमोहन मदारिया	212
	व्याकरण-विभाग		
1	वाक्यभेद		219
2	संज्ञा		221
3	विशेषण		223
4	क्रिया के काल		226
5	मुहावरे		231
6	वाक्य शुद्धीकरण		234
	लेखन-विभाग		
1	निबंध लेखन		238
2	पत्रलेखन		259
3	विज्ञापन		274
4	सारांश लेखन		278
5	गद्य आकलन		282
	प्रश्नपत्र		
1	नमूना प्रश्नपत्र - 1		286
2	नमूना प्रश्नपत्र - 2		291
3	प्रश्नपत्र : मार्च -2014		296

गद्य - विभाग

01 युवाओं से

स्वामी विवेकानंद
(सन् 1863 – 1902 ई.)

लेखक परिचय :

स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति और सभ्यता के इतिहास में एक मात्र ऐसे विचारक हुए हैं, जिन्होंने पहली बार भारतीय आध्यात्मिक संपदा और ज्ञान को विश्व से परिचित कराया। वे संपूर्ण अध्यात्मिक परंपरा के दार्शनिक और ज्ञानी रहे हैं। जिनके माध्यम से सारा संसार भारत की उच्चतम् दार्शनिक विचारधारा, वैज्ञानिक संस्कृति व परंपरा के प्रति आकर्षित हुआ। वे भारत की ओर से शिकागो की विश्वधर्म संसद में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले पहले व्यक्ति थे। एक विचारक के रूप में उन्होंने संपूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया। एक साधक, गंभीर दार्शनिक, समाज सेवक, सुधारक और राष्ट्रभक्त के रूप में स्वामी जी 21वीं सदी के भारत में आज भी गौरवान्वित हैं। स्वामी जी का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 में कोलकाता में हुआ। विश्वभर में भारत को अपने विचारों से गौरवान्वित करनेवाले स्वामी जी 39 वर्ष की अल्पआयु में सन् 1902 में स्वर्गवासी हो गए।

प्रमुख कृतियाँ :

'प्रेमयोग', 'ज्ञानयोग', 'भगवान कृष्ण और भगवद् गीता', 'राजयोग', 'आत्म साक्षात्कार: साधना और सिद्धि'।

पाठ का उद्देश्य :

स्वामी जी देश के युवाओं को आध्यात्मिक शक्ति, आत्मविश्वास, मनोबल और सदाचार के माध्यम से देश की उन्नति और विकास के लिए आगे आने का आह्वान करते हैं। वे त्याग और सेवा को भारत का राष्ट्रीय आदर्श मानकर देश के युवाओं के भीतर के आत्मबल को संबोधित कर रहे हैं। इस देश को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी तरह की समस्याओं से मुक्ति दिलाने व भारत के जनता की सेवा करने के लिए बाध्य कर रहे हैं।

सारांश :

स्वामी जी की चिंता :

भारत के विराट जनसमुदाय के सामने अपनी आध्यात्मिक मुक्ति के अलावा ऐसे बहुत से प्रश्न हैं जिन्हें पूरा करना बाकी हैं और यह प्रश्न उनके सामने रोग, दु:ख, गरीबी, निर्माण व विकास से संबंधित हैं। प्रस्तुत पाठ "युवाओं से" के माध्यम से विवेकानंद इन्हीं प्रश्नों के हल के रूप में भारत देश के युवाओं को देखते हैं।

देश के लिए स्वामी जी की, युवाओं से अपेक्षा :

इस पाठ में स्वामी जी, युवाओं से बौद्धिक, आत्मिक और आध्यात्मिक शक्तियों के माध्यम से भारतीय समाज और देश की सेवा के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं। वे कहते हैं कि मरते दम तक गरीबों और पद-दलितों के लिए सहानुभूति ही युवाओं के आदर्श वाक्य होने चाहिए। आपसी बैर, वैमनस्य और ईष्या व आलस्य को छोड़कर वे युवाओं से संगठनात्मक रूप से एक विचार के प्रति पूरी निष्ठा, समर्पण और ईमानदारी के साथ जुड़ने के लिए कहते हैं और नैतिक मूल्यों से दृढ़ता के साथ आगे आकर उसे जमीन पर आकार देने के लिए प्रेरित करते हैं।

शब्दार्थ :

अनुष्ठेय	आवश्यक।
***अप्रतिहत**	अप्रभावित, अंकुश।
अवनति	उन्नति न होना, पिछड़ना।
अवलंबित	आश्रित।
आच्छन्न	ढँका हुआ, छिपा हुआ।
उत्पीड़ित	जिसे पीड़ा या कष्ट पहुँचाया गया हो।
उन्मत्तता	मन में आने वाला आवेग, नशे में चूर

कार्यान्वित	प्रचलन में लाना।
क्रूर	मन से कठोर, हिंसक, निर्दयी।
गर्त	गड्ढा, दरार।
दुर्दशा	दुरावस्था, दुर्गति।
***निर्दिष्ट**	बतलाया हुआ, निश्चित किया हुआ।
***निर्भीकता**	निडरता
पद-दलित	पैरों से रौंदे हुए, जो अन्याय सहते हो।
***पुनरुत्थान**	फिर से उठना, नवनिर्माण।
मढ़ना	थोपना।
***महामहिमान्वित**	महान गुणों से युक्त।
स्पंदन	कंपन, धड़कन।
***समष्टि**	सामूहिकता।
सिंहतुल्य	सिंह के समान।
***सिंहविक्रम**	बच्चों की हर्षध्वनि, साहस।

***मुहावरे के अर्थ और वाक्यों में प्रयोग :**

1. **पैरों पर खड़ा होना:** स्वावलंबी बनना।
   विजय की सरकारी नौकरी लगते ही, माता-पिता ने राहत की साँस ली कि वह अब अपने **पैरों पर खड़ा हो गया।**

2. **पैरों पर लोटना:** शरण में आना, गिड़गिड़ाना।
   नौकरानी को लगा कि चोरी पकड़ी गई शीघ्र ही वह मालकिन के **पैरों में लोट गई।**

स्वाध्याय

***प्र.1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखिए :**

1. स्वामी विवेकानंद जी ने भारत के पुनरुत्थान के लिए किस शक्ति को अधिक महत्त्वपूर्ण माना है और क्यों?

उत्तर: स्वामी विवेकानंद जी का कहना है कि इस देश की दुर्दशा एक चिंतनीय विषय है। उन्हें विश्वास है कि नई पीढ़ी के द्वारा देश का पुनरुत्थान हो सकता है। लेकिन उनका मानना है कि भारतवर्ष के पुनरुत्थान के लिए शारीरिक शक्ति की अपेक्षा आत्मा की शक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण है।

आत्मा की शक्ति के द्वारा ही भारत का पुनरुत्थान होगा। स्वामी जी के अनुसार राष्ट्र के उत्थान के लिए आत्मा की शक्ति से मनुष्य शक्तिशाली बनेगा। उसके मन में आत्मबल, साहस, हिम्मत और दृढ़संकल्प का संचार होगा और यह बडे से बडे लक्ष को साध लेगा। उनके अनुसार आत्मा की ही शक्ति से भारत के लोग कठिन से कठिन बाधा का क्षण में पार पा लेंगे।

उनका मानना है कि आत्मा का साक्षात्कार होने से मनुष्य मात्र स्वार्थ, ईर्ष्या, घृणा, लोभ, प्रतिशोध और अहंकार जैसे अवगुणों से मुक्त हो जाएगा, और उसके भीतर सारे संसार के प्रति प्रेम उत्पन्न होगा, और वह प्राणी मात्र की सेवा में तत्पर होगा।

स्वामी विवेकानंद जी ने भारत के पुनरुत्थान के लिए आत्मा की शक्ति को अधिक महत्त्वपूर्ण माना है। क्योंकि स्वामी जी आत्मा की शक्ति में ही चरित्र का विकास देखते हैं।

2. "युवाओं से" पाठ आज के युवकों के सामने आदर्श प्रस्तुत करता है स्पष्ट कीजिए?

[Feb. 2014]

उत्तर: "युवाओं से" पाठ भारत के युवकों के सामने सबसे बड़ा आदर्श त्याग और सेवा का रखता है। इस निबंध में स्वामी जी नई पीढ़ी के नवयुवकों के चरित्र और व्यक्तित्व को आत्मा के साक्षात्कार और उनके आध्यात्मिक विकास के माध्यम से बनाना चाहते हैं। स्वामी जी "युवाओं से" पाठ के माध्यम से युवकों के सामने इस राष्ट्र के प्रति संपूर्ण समर्पण, त्याग, सेवा, दीन-दुखियों के प्रति आजीवन सहानुभूति रखने का आदर्श रखते हैं। स्वामी जी युवकों से कहते हैं सदैव अपने लक्ष्य की ओर बढते रहना, कहीं रुकने की आवश्यकता कतई नहीं है। स्वामी जी युवकों से ईश्वर के प्रति निरंतर आस्था रखते हुए किसी तरह की चालबाजी नहीं दिखाने का आग्रह करते हैं। बल्कि प्रेम से लोगों के दिल जितने होंगे। प्रेम,

सहनशीलता और समझौतावादी दृष्टिकोण असंभव कार्य को भी संभव बना देता है।

वे युवकों के सामने सारा जीवन इस राष्ट्र के जन की सेवा में लगाने की प्रतिज्ञा लेने का आदर्श रखते हैं।

3. विवेकानंद जी ने युवाओं पर कौन-सी जिम्मेदारी सौंप दी है?

उत्तर: आज का युवक आत्मपरक हो गया है। वह अपने आप में ही जीता है। लेकिन स्वामी विवेकानंद जी चाहते हैं कि देशभक्ति की प्रबल भावना आज के युवाओं में जागृत हो। शिक्षा को जानकारियों के ढेर की तरह नहीं वरन् उन विचारों की अनुभूति को जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण एवं चरित्र निर्माण में भी सहायक बनाएँ। स्वामी जी युवाओं को एक विचार के प्रति निष्ठावान रहने और उसी विचार के अनुसार अपने जीवन को बनाने के लिए कहते हैं। वे युवाओं को दिशा देते हुए तब तक आगे बढते रहने के लिए कहते हैं जब तक कि लक्ष्य को प्राप्त न कर लिया जाए। स्वामी जी युवकों को आत्मप्रतिष्ठा, दलबंदी और ईर्ष्या को सदा के लिए छोड देने और धरती की तरह सहनशीलता का गुण अपनाने की बात करते हैं। वे युवकों से संगठन की शक्ति पैदा करने और अपने भीतर से ईर्ष्या का भाव हटाकर अपने साथियों के साथ हर विचार पर सहमति जताने और मिलकर काम करने की अपेक्षा रखते हैं।

स्वामी विवेकानंद जी ने राष्ट्र के युवकों को देश की पद-दलित, गरीब, हीन, रोगी और दु:खी जनता की सेवा करने और उनके लिए जीवन पर्यन्त सहानुभूति रखने की जिम्मेदारी सौंपी है।

4. 'युवाओं से' पाठ का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए?

उत्तर: 'युवाओं से' पाठ दरअसल स्वामी विवेकानंद का देश के युवाओं से सीधा संवाद है। इस पाठ के माध्यम से स्वामी जी देश के युवाओं को आध्यात्मिक शक्ति, आत्मविश्वास, मनोबल और सदाचार से परिपूर्ण चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रेरित करते हैं।

स्वामी विवेकानंद जी के लिए देश की दुर्दशा एक चिंताजनक एवं दु:ख प्रदान करने वाली स्थिति है। उनका मानना है कि लोग स्वदेश भक्ति की बाते करते हैं लेकिन मैं स्वदेश भक्ति में विश्वास रखता हूँ। हमारे पूर्वज देव और ऋषि थें, हम उनकी संतानें आज पशुतुल्य मानी जा रही हैं। स्वामी जी युवाओं के चारित्रिक विकास के माध्यम से उनके आत्मिक उत्थान की बात करते हैं। वे युवाओं में राष्ट्र के प्रति निष्ठा, कर्मठता, समर्पण, त्याग और सेवा का भाव जगाना चाहते हैं।

स्वामी जी देश की उन्नति और विकास के लिए युवकों से आगे आने का आह्वान करते हैं। वे उन्हें "उठो, जागो, और तब तक नहीं रुको, जब तक कि लक्ष्य नहीं प्राप्त हो जाए" का मंत्र देकर इस देश की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी तरह की समस्याओं से मुक्ति दिलाने व भारत की जनता की सेवा करने के लिए कह रहे हैं।

***प्र.2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :**

1. स्वामी विवेकानंद जी के विचारों से युवाओं को कौन-सी प्रेरणा शक्ति मिलती है?

उत्तर: स्वामी विवेकानंद देश के युवकों को देश के पुनरुत्थान के लिए प्रतिस्थापित करना चाहते हैं। उनका कहना है कि देश का पुनरुत्थान गरीबों एवं पद-दलितों की सहायता करके ही हो सकता है। इसके लिए युवाओं को शक्तिशाली, आत्मविश्वासी, मनोबल से युक्त और आध्यात्मिक शक्तियों से ओत-प्रोत होकर राष्ट्र और समाज की सेवा करने की प्रेरणा मिलती है। स्वामी जी युवकों को सदाचार, सेवा व त्याग के माध्यम से केवल काम में लग जाने की प्रेरणा देते हैं। वे युवाओं को हमेशा आगे बढ़ने की और अपने स्वभाव में संगठन के अभाव की पूर्ति करने के लिए एक मत रखनें, आत्मप्रतिष्ठा, दलबंदी और ईर्ष्या को सदा के लिए छोडने की प्रेरणा देते हैं। युवाओं से स्वामी जी पृथ्वी माता की तरह सहनशील होने, अपने चरित्र का निर्माण करने एवं लक्ष्य की ओर तब तक

आगे बढ़ने के लिए कहते हैं, जब तक कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।

इस प्रकार प्रेम, त्याग, बलिदान, सेवा से ओत-प्रोत होकर देशोद्धार करने की प्रेरणा मिलती है।

2. स्वामी विवेकानंद जी ने "युवाओं से" पाठ के द्वारा युवाओं को कौन-सा संदेश दिया है?

उत्तर: स्वामी विवेकानंद जी को आशा है कि देश की युवा शक्ति ही भारत देश की वास्तविक शक्ति है। उनमें यदि देश भक्ति की भावना जगाई जाए तो वे संगठित होकर देश का पुनरुत्थान करने के लिए सक्षम बन सकते हैं। वे "युवाओं से" पाठ के द्वारा युवाओं को संदेश देते हुए कहते हैं कि सर्वप्रथम अपने चरित्र का निर्माण करो, उसके बाद त्याग और सेवा के माध्यम से अपने राष्ट्र को कल्याण और उन्नति के रास्ते पर ले जाने का प्रयास करो। वे कहते है कि भारत वर्ष का निर्माण शारीरिक शक्ति से नहीं, बल्कि आत्मिक शक्ति से होगा। विवेकानंद जी नवयुवकों को शक्तिशाली बनने के लिए, ज्ञान को आत्मसात करते हुए देश सेवा के लिए संगठन बनाने का संदेश देते हैं। उनका मानना है कि देश का युवा यदि आपसी वैमनस्य, दलबंदी और ईर्ष्या छोड़कर सहनशीलता को अपनाए तो सारा संसार हमारे कदमों में होगा।

इस प्रकार विवेकानंद जी ने नवयुवकों को शक्तिशाली बनकर, ज्ञान को आत्मसात कर, देश सेवा के लिए संगठित होने का संदेश दिया है।

3. विवेकानंद जी ने स्वदेश भक्ति के संबंध में कौन-सा आदर्श प्रस्तुत किया है?

उत्तर: स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं कि लोग स्वदेश भक्ति की चर्चा करते हैं, लेकिन मैं स्वदेशभक्ति में विश्वास करता हूँ। पर स्वदेश के संबंध में मेरा एक आदर्श है। बडे काम करने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है बुद्धि और विचारशक्ति हम लोगों की थोडी सहायता कर सकती है। वह हमको थोडी दूर अग्रसर करा देती है और वहीं ठहर जाती है। किंतु हृदय के द्वारा ही महाशक्ति की प्रेरणा होती है। प्रेम असंभव को संभव कर देता है। जगत् के सभी रहस्यों का द्वार प्रेम ही है। यहाँ स्वामीजी कहते हैं कि मेरे भावी संस्कार, मेरे भावी देशभक्तों तुम हृदयवान बनों। देशवासियों की पीड़ा देखकर यदि हमारा हृदय व्यथित होता है तो उनके प्रति हमारी सहृदयता प्रमाणित है। सहृदयता का यह भाव व्यक्ति को नाम यश और संपत्ति जैसे भौतिक सुख से हटकर मानव सेवा की ओर ले जाता है।

इस प्रकार स्वामी विवेकानंद जी ने स्वदेश भक्ति के सम्बन्ध में महाशक्ति से प्रेरणा लेकर हृदयवान देशभक्त बनने का आदर्श प्रस्तुत किया है।

4. मनुष्य का मुख्य लक्ष्य कौन-सा होना चाहिए?

उत्तर: स्वामी जी के अनुसार एक मनुष्य का लक्ष्य हमेशा आगे बढ़ते रहना होना चाहिए। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य को एक विचार के अनुसार अपना जीवन बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। मनुष्य को लक्ष्य के बारे में सोचना चाहिए, उसी का स्वप्न देखना चाहिए और उसी पर अवलम्बित होना चाहिए। अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, स्नायुओं और शरीर के प्रत्येक भाग को उसी विचार से ओत-प्रोत होने दो और दूसरे सब विचारों को अपने से दूर रखो। स्वामी जी के अनुसार यही सफलता का रास्ता है, और यही वह मार्ग है जिसने महान धार्मिक पुरुषों का निर्माण किया है। जो स्वयं के साथ-साथ दूसरों का भी उद्धार कर सके।

इस प्रकार मनुष्य का मुख्य लक्ष्य सार्थकता की प्राप्ति होना चाहिए।

प्र.3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

***1. "हमारे स्वभाव में संगठन का सर्वथा अभाव है, पर इसे हमें अपने स्वभाव में लाना है। इसका महान रहस्य है ईर्ष्या का अभाव। अपने भाइयों के मत से सहमत होने को सदैव तैयार रहो और हमेशा समझौता करने का प्रयास करो।"**

[Feb. 2014]

प्रश्न: **1. उपर्युक्त कथन किस पाठ से लिया गया है?**

उत्तर: यह कथन स्वामी विवेकानंद जी द्वारा लिखित निबंध 'युवाओं से' लिया गया है।

2. हमारे स्वभाव में किस बात का अभाव है?

उत्तर: हमारे स्वभाव में संगठन का अभाव है।

3. स्वभाव में संगठन लाने के लिए किसका अभाव होना चाहिए?

उत्तर: स्वभाव में संगठन लाने के लिए ईर्ष्या का अभाव होना चाहिए।

4. हमें किसके मत से सहमत होना चाहिए?

उत्तर: हमें अपने भाइयों के मत से सहमत होना चाहिए।

***2. "भारत वर्ष का पुनरुत्थान होगा, पर वह शारीरिक शक्ति से नहीं, वरन् आत्मा की शक्ति द्वारा। वह उत्थान विनाश की ध्वजा लेकर नहीं, वरन् शांति और प्रेम की ध्वजा से।"**

प्रश्न: **1. भारत वर्ष का पुनरुत्थान कैसे हो सकता है?**

उत्तर: भारत वर्ष का पुनरुत्थान आत्मा की शक्ति से हो सकता है।

2. शांति और प्रेम की ध्वजा से क्या हो सकता है?

उत्तर: शांति और प्रेम की ध्वजा से भारत वर्ष का पुनरुत्थान हो सकता है।

3. आत्मा की शक्ति द्वारा किसका पुनरुत्थान होगा?

उत्तर: आत्मा की शक्ति द्वारा भारतवर्ष का पुनरुत्थान होगा।

4. इस पाठ में युवाओं को कौन संदेश दे रहा है?

उत्तर: इस पाठ में युवाओं को स्वामी विवेकानंद संदेश दे रहे हैं।

3. "युवको!..... प्रतिज्ञा करो कि अपना सारा जीवन इन तीस करोड़ लोगों के उद्धारकार्य में लगा दोगे, जो दिनों-दिन अवनति के गर्त में गिरते जा रहे हैं। यदि तुम सचमुच मेरी संतान हो, तो तुम किसी वस्तु से न डरोगे, न किसी बात पर रुकोगे।"

प्रश्न: **1. इस पाठ में युवको से क्या करने को कहा जा रहा है?**

उत्तर: इस पाठ में युवको को प्रतिज्ञा करने को कहा जा रहा है।

2. सारा जीवन किसके उद्धारकार्य में लगा देने के लिए कहा है?

उत्तर: सारा जीवन तीस करोड़ लोगों के उद्धारकार्य में लगा देने के लिए कहा है।

3. दिनों-दिन किसके गर्त में गिरते जा रहे हैं?

उत्तर: दिनों-दिन अवनति के गर्त में गिरते जा रहें हैं।

4. लेखक युवाओं को कैसी हिदायत दे रहे हैं?

उत्तर: लेखक युवाओं को किसी वस्तु से न डरने की एवं ना ही किसी बात पर रुकने की हिदायत दे रहे हैं।

***प्र.4. निम्नलिखित विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।**

1. बुद्धि और विचार से बड़ी शक्ति _____ की महाशक्ति है।
   (अ) हृदय (ब) सच्चाई
   (क) सामर्थ्य

२. त्याग और सेवा भारत के _____ आदर्श हैं।
   (अ) आर्थिक (ब) राष्ट्रीय
   (क) प्रादेशिक

३. मरते दम तक गरीबों और पद-दलितों के लिए _____ ये ही हमारे आदर्श वाक्य हैं।
   (अ) दया (ब) सहानुभूति
   (क) क्रोध

4. जगत के सब रहस्यों का द्वार _____ है।
(अ) प्रेम (ब) दु:ख
(क) ईर्ष्या

उत्तर: 1. बुद्धि और विचार से बड़ी शक्ति **हृदय** की महाशक्ति है।
2. त्याग और सेवा भारत के **राष्ट्रीय** आदर्श हैं।
3. मरते दम तक गरीबों और पद-दलितों के लिए **सहानुभूति** ये ही हमारे आदर्श वाक्य हैं।
4. जगत के सब रहस्यों का द्वार **प्रेम** है।

*भाषाभ्यास : व्याकरण

प्र.5.(अ) निम्नलिखित वाक्यों में कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए।

1. मैं अपने सामने एक सजीव दृश्य देख रहा हूँ। (सामान्य भूतकाल)

उत्तर: मैंने अपने सामने एक सजीव दृश्य देखा।

2. देखो, वह निद्रित भारत अब जागने लगा है। (भविष्यत्काल)

उत्तर: देखो, वह निद्रित भारत अब जागने लगेगा।

3. काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है। (पूर्ण भूतकाल) [Feb. 2014]

उत्तर: काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठी थी।

4. मैंने तो इन नवयुवकों का संगठन करने के लिए जन्म लिया। (सामान्य वर्तमानकाल)

उत्तर: मैं तो नवयुवकों को संगठित करने के लिए जन्म लेता हूँ

5. मैं प्रार्थना करता हूँ। (अपूर्ण वर्तमानकाल)

उत्तर: मैं प्रार्थना कर रहा हूँ।

(ब) निम्नलिखित शब्दों के विशेषण रूप बनाइए।

*जीवन – जीवित	राष्ट्र – राष्ट्रीय
*भूख – भूखा	स्वभाव – स्वाभाविक
*दया – दयालु	धर्म – धार्मिक
*प्यास – प्यासा	सच्चा – सच्चाई
*पाप – पापी	क्रोध – क्रोधी
*सहना – सहनशील	समाज – सामाजिक

(क) निम्नलिखित शब्दों के भाववाचक रूप लिखिए:

आवश्यक– आवश्यकता	सहायक – सहायता
उपासक – उपासना	विचार – वैचारिक
शिक्षित – शिक्षा	निर्धन – निर्धनता
राष्ट्र – राष्ट्रीय	प्रादेशिक – प्रदेश
आत्मा – आत्मिक	नेता – नैतिक
सफल – सफलता	परिश्रम – परिश्रमी

(ड) निम्नलिखित वाक्यों के रचनानुसार भेद पहचानकर लिखिए:

प्रश्न: 1. यह देखकर मुझे प्रसन्नता ही होगी।
2. दुखियों का दर्द समझों और ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करो।
3. शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है, जो तुम्हारे मस्तिष्क में ठूँसा गया है।
4. लोग स्वदेश-भक्ति की चर्चा करते हैं।
5. यह वह मार्ग है जिसने महान धार्मिक पुरुषों का निर्माण किया है।

उत्तर: 1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र वाक्य 4. सरल वाक्य
5. मिश्र वाक्य

*उपक्रम:

प्रश्न: 'भारत देश की महान संस्कृति' विषय पर निबंध लिखिए:

उत्तर: भारत देश की महान संस्कृति

भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे प्राचीनतम् संस्कृतियों में से एक है। उच्चतम् दार्शनिक चिंतन, आध्यात्म के उत्तुंग शिखर से लेकर मानव कल्याण तक, उसकी मुक्ति की भावना देश की दार्शनिक और आध्यात्मिक संस्कृति की अविरल धारा है, जो आज भी सतत प्रवाहमान है। भारतीय संस्कृति दुनिया के सबसे प्राचीन धर्मग्रंथों एवं वेदों को अपने भीतर

आत्मसात करने वाली यह सबसे प्राचीन सभ्यता भी रही है। धर्म, दर्शन, वैराग्य की भावना और मनुष्य मात्र को मुक्ति की अभिलाषा के लक्षण हजारों-लाखों वर्षों से इस संस्कृति की शिराओं में बह रहे हैं।

सहिष्णुता, समन्वयता और विश्व की समस्त संस्कृतियों के प्रति आदरदृष्टि रखते हुए उसे अपने भीतर आत्मसात करना भारतीय संस्कृति की महानतम् विशेषता है। इस संस्कृति में सर्वाधिक आश्चर्यचकित करने वाली बात यह रही है कि इस संस्कृति में हजारों सालों से अलग-अलग सभ्यता और संस्कृति व धर्म को मानने वाली दुनिया के कई देशों की सभ्यताएँ आती रहीं, जैसे, शक, हुण, मंगोल, द्रविड़ और मुगल आदि जातियाँ भारत देश में आई। यह यहाँ आकर भारतीय संस्कृति में मिलती चली गईं। लेकिन यह संस्कृति लुप्त नहीं हुई, बल्कि इस संस्कृति ने उसे अपने भीतर आत्मसात कर लिया। वे यहाँ आकर रच-बस गईं। इस संसार में यह आश्चर्य की ही बात है कि एक ओर जहाँ दुनिया की अतिप्राचीन चीन, मिस्र, यूनान जैसी सभ्यताएँ और संस्कृतियाँ द्वारा आक्रांत होने के बाद भी हमारी संस्कृति जस की तस बनी हुई हैं। इसका श्रेय वेदों, पुराणों एवं ग्रंथों के साथ-साथ महान विचारकगण; जैसे स्वामी विवेकानंद, बुद्ध, गाँधी जी इत्यादि को जाता है।

भारतीय संस्कृति में वैज्ञानिक दर्शन, व आध्यात्मिक परंपरा की विशाल और महान विरासत की धारा आज भी प्रवाहमान है, इस विशाल भौगोलिक राष्ट्रीय इकाई में भाषाई, रहन-सहन, खान-पान और वेशभूषा व बोली की विविधता ने एक ऐसी संस्कृति का निर्माण किया है जो आज पूरी दुनिया के सामने किसी आश्चर्य से कम नहीं है। जितने उत्सव, त्यौहार, आयोजन, रीति-रिवाज और परम्पराओं का मेला भारतीय संस्कृति में लगता है उतना विश्व की किसी अन्य संस्कृति और सभ्यता में कल्पना से परे है। यह कोई कम आश्चर्य नहीं कि 12 सालों में लगने वाला कुंभ का मेला संसार का सबसे बड़ा आध्यात्मिक, पारंपारिक और सांस्कृतिक उत्सव है जिसमें करोड़ों लोग शामिल होते हैं। यह इसी भारतीय संस्कृति की बलिहारी है।

समन्वय की यह संस्कृति सभी अन्य संस्कृतियों को अपने भीतर समाहित कर पूरे राष्ट्र में एकता का सूत्रपात कर रही है। सांस्कृतिक विवधताओं के बीच समन्वय में समर्पण इस देश की राष्ट्रीय एकता में देखने को मिलता है। अहिंसा के मंत्र को अपनाकर विश्वबंधुत्व का संदेश देती है।

ज्ञान जाँचिए - 01

समय : 1 घंटा **अंक – 20**

प्र.1.अ. निम्नलिखित विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए। [02]

1. त्याग और सेवा भारत के _____ आदर्श हैं।
   (अ) आर्थिक (ब) राष्ट्रीय
   (क) प्रादेशिक
2. जगत के सब रहस्यों का द्वार _____ है।
   (अ) प्रेम (ब) दु:ख
   (क) ईर्ष्या

आ. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: [04]

"भारत वर्ष का पुनरुत्थान होगा, पर वह शारीरिक शक्ति से नहीं, वरन् आत्मा की शक्ति द्वारा। वह उत्थान विनाश की ध्वजा लेकर नहीं, वरन् शांति और प्रेम की ध्वजा से।"

1. भारत वर्ष का पुनरुत्थान कैसे हो सकता है?
2. शांति और प्रेम की ध्वजा से क्या हो सकता है?
3. आत्मा की शक्ति द्वारा किसका पुनरुत्थान होगा?
4. इस पाठ में युवाओं को कौन संदेश दे रहा है?

इ. निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किन्हीं दो</u> प्रश्न का उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए। [06]

1. स्वामी विवेकानंद जी ने "युवाओं से" पाठ के द्वारा युवाओं को कौन-सा संदेश दिया है?
2. मनुष्य का मुख्य लक्ष्य कौन-सा होना चाहिए?
3. स्वामी विवेकानंद के विचारों से युवाओं को कौन-सी प्रेरणा मिलती है।

ई. निम्नलिखित प्रश्नों में से <u>किसी एक</u> प्रश्न का उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखिए। [04]

1. "युवाओं से" पाठ आज के युवकों के सामने आदर्श प्रस्तुत करता है स्पष्ट कीजिए?
2. विवेकानंद जी ने युवाओं पर कौन-सी जिम्मेदारी सौंप दी है?
3. 'युवाओं से' पाठ का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए?

प्र.2. अ. कोष्ठक की सूचना के अनुसार <u>किन्हीं एक</u> वाक्य का काल-परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए। [01]

1. मैं अपने सामने एक सजीव दृश्य देख रहा हूँ।
   (सामान्य भूतकाल)
2. काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है।
   (पूर्ण भूतकाल) **[Feb. 2014]**

आ. निम्नलिखित शब्दों में से <u>किसी एक</u> का विशेषण रूप बनाइए। [01]

1. जीवन 2. भूख

इ. निम्नलिखित मुहावरों में से <u>किसी एक</u> का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए। [01]

1. पैरों पर खड़ा होना 2. पैरों पर लोटना

ई. निम्नलिखित वाक्यों में से <u>किसी एक</u> वाक्य को शुद्ध करके फिर से लिखिए। [01]

1. मैने अपना जीवन समर्पित कर दी है।
2. तुमने स्वदेश भक्ति का प्रथम सीढ़ी पर पैर रखा है।